दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-II (प्रश्नपत्र-1)

DTVF/19(N-M)-HL-**HL2**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): ANKIT MISHRA

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं?

हाँ		नहीं	✓

मोबाइल नं. (Mobile No.): ____________

ई-मेल पता (E-mail address): ____________

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): II (8th January 2019)

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2019] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2019]:

विद्यार्थी के हस्ताक्षर
(Student's Signature): Ankit

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ टिप्पणी (Remarks): ____________

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) तारसप्तक

तारसप्तक एक पत्रिका थी जिसकी संपादन अज्ञेय ने शुरू किया था। इसके माध्यम से इन्होंने एक नए कहानी-आंदोलन की नींव रखी थी।

तारसप्तक में सुमित्रानंदन पंत द्वारा लिखी गई भूमिका की वजह से भी यह चर्चित हुआ। इस भूमिका से सुमित्रा नंदन पंत का समीक्षा दृष्टिकोण व समीक्षा दृष्टि ~~भी स्पष्ट होती~~ के कुछ पहलू भी उजागर होते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी साहित्येतिहास को ग्रियर्सन की देन

हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की लंबी परंपरा, जिसमें औपचारिक साहित्येतिहास लेखन व अनौपचारिक साहित्येतिहास लेखन दोनों शामिल है, को जार्ज ग्रियर्सन का बड़ा योगदान मिला है। ग्रियर्सन मूलतः एक विदेशी विद्वान व अधिकारी थे जिनकी हिन्दी में दिलचस्पी मूलतः अपने कार्यकाल के दौरान उपजी और इसी दिलचस्पी ने हिन्दी साहित्येतिहास लेखन को कुछ मौलिक उद्भावनाएँ प्रदान की।

ग्रियर्सन ने हिन्दी साहित्य के इतिहास को कालखण्डों में विभाजित करने का प्रयास किया। यद्यपि उनका विभाजन काफी भ्रामक और दोषपूर्ण भी था, तथापि इसने आगे आने वाले साहित्येतिहासकारों के लिए एक नया मार्ग प्रशस्त किया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ग्रियर्सन ने 'द मार्डन वर्नाकुलर लिटरेचर ऑफ मार्डन हिंदुस्तान" भी लिखी। ~~इनके~~

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) विद्यापति की सौंदर्य-चेतना

विद्यापति मूलतः मैथिल कवि हैं जिनका साहित्य समीक्षकों में विवाद का विषय रहा है। कुछ समीक्षकों ने उनके साहित्य को बेहद सकारात्मक रूप से मूल्यांकित किया तो कुछ ने बेहद कठोर शब्दों में फटकार की लगा। इस विरोधाभाषी मूल्यांकन की मूल वजह विद्यापति की कविताओं में राधाकृष्ण का शृंगार वर्णन है।

~~विद्यापति के~~ विद्यापति के ~~राधा~~ राधा और कृष्ण नित शृंगार में हि लिप्त रहते हैं और इस वर्णन ~~के~~ के लिए विद्यापति के द्वारा प्रयुक्त की गई शब्दावली भी असहज कर देने वाली है, तभी कई बार ऐसा प्रतीत होता है विद्यापति की भक्ति-भावना की ओट में कोई और ही भावना ~~छ~~ छिपी हुई है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ग्रियर्सन जैसे विद्वानों नें राधा और कृष्ण के शृंगार को आत्मा और परमात्मा के मिलन के रूप में व्याख्यायित किया है, ऐसी आत्मा जो परमात्मा से मिलन को निरंतर व्याकुल और प्रयासरत है

दूसरी तरफ आचार्य शुक्ल जैसे समीक्षकों नें इसकी आलोचना करते हुए हुए ~~प्रसंग~~ "राधिका-कन्हाई को तो बहानो है" जैसी बात कही है। उनके अनुसार विद्यापति के पदों में भक्ति सिर्फ "आध्यात्मिकता के ~~सस्ते~~ सस्ते चश्मों" से देखने पर ही नजर आ सकती है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(घ) अष्टछाप

"अष्टछाप" भक्तिकालीन कृष्ण-भक्ति परंपरा के प्रमुख आठ कवियों का समूह है जिसमें सूरदास सरीखे भक्त भी शामिल हैं। ये आठो भक्त-कवि विट्ठल-दास मंदिर में ~~रहकार~~ रहकर उनकी प्रशंसा ~~में~~ और प्रार्थना में पद-रचना किया करते थे। इन्होंने स्वयं को कृष्ण के मित्र या सखा के रूप में रखकर पदों की रचना की।

इनमें सूरदास अग्रणी कवियों में हैं जिनकी पद रचना कृष्ण-भक्ति की चरम उपलब्धि है। सूरदास नें कृष्ण के बाल रूप का जिस मनमोहक अंदाज में वर्णन किया है उसका अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि आज भी "मैया मोरी मैं नहिं माखन खायो" जैसे भजन/पद

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

न सिर्फ साहित्य प्रेमियों बल्कि सामान्य जन-मानस के हितों-हितों में पैठ बना चुका है।

अष्टछाप के अन्य कवियों में भी इसी प्रकार से कृष्ण-भक्ति के अप्रतिम पदों की रचना की है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) कवि सुंदरदास

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

कवि सुंदरदास ~~अष्ट~~ अष्टछाप कवियों में से एक थे। इन्होंने विट्ठल स्वामी मंदिर में बाल-कृष्ण की भक्ति में पद लिखे। ये भक्तिकालीन कृष्ण भक्ति काव्यधारा के एक प्रमुख कवि हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'हिन्दी सूफी काव्यधारा ने हिन्दुओं व मुसलमानों को साहचर्य व प्रेम में रहने की मानसिकता प्रदान की।' इस मत का अनुशीलन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी में सूफी काव्य का विस्तार ऐसे समय में हुआ, जब शायद इसकी सबसे ज्यादा आवश्यकता थी थी। ~~सदियों तक छोटे-छोटे राज्यों में बंटे देश की स्थिति~~ था। इस्लामी आक्रमण तथा इसके बाद स्थापित इस्लामी सत्ता ने भारतीय समाज में एक ऐसी विचित्र स्थिति पैदा कर दी जहाँ शासक वर्ग इस्लाम मत का अनुयायी था तो आम नागरिक मुख्यतः हिंदू मत का। शासक और शासित के बीच की इस धार्मिक और सांस्कृतिक खाई की वजह से परस्पर एक दूसरे के प्रति वैमनस्य का भाव सर्वत्र व्याप्त था। इसके अतिरिक्त तत्कालीन समाज में ऐसे और भी अनेकानेक पंथ थे जो या तो हिंदू धर्म से ही अलग होकर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

चले में था कुछ स्वतंत्र रूप से भी आजे थे। इन सब में परस्पर वैचारिक मतभेद था जोकि सामान्यतः समाज के आचरण में नकारात्मक रूप से परिलक्षित होता था।

ऐसे विषम समय में सूफी काव्यधारा का विस्तार एक सुखद प्रक्रिया थी। इसके पहले कबीर दास जैसे संत कवियों नें हिंदू और मुसलमान दोनों ही पक्षों को उनकी पथ कुरता, धार्मिक-कट्टरता, अतार्किकत आदि सामाजिक विद्रूपताओं के लिए कड़ी फटकार लगा चुके थे — अब सिर्फ बाकी था हिंदू और मुसलमानों में सौहार्द स्थापित करने का कार्य जिसे सूफी कवियों नें पूरा किया

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सूफी कवि मुख्यतः मुस्लिम पंथ से थे परंतु उन्होंने अपनी रचनाओं में हिंदू देवी-देवताओं, पौराणिक कहानियों आदि को आधार बनाया। इसके अतिरिक्त उन्होंने भारतीय पंथों से भी कई मूल्य और सिद्धांत अपने में समाहित किए। नाथों की हठ परंपरा और रहस्यवाद का सूफीयों द्वारा प्रयोग, सगुण और निर्गुण में से किसी एक को चुनने के बजाए दोनों को समान महत्व देना आदि कुछ ऐसे कारक थे जिसने हिंदू और मुसलमानों को नजदीक लाने का काम किया।

सूफी कालधारा के आगमन ने पहली बार ऐसी स्थिति पैदा की जहाँ मुस्लिम कवि हिंदुओं के घरों में देखकर, उनकी परंपराओं और रीति-रिवाजों में खुद को ढालकर

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

काव्य रचना करने लगा।

रसखान की कृष्ण काव्ति हो या जायसी कृत पद्मावत, ऐसी तमाम रचनाएँ सूफियों ने कि जिससे हिंदू और मुस्लिम नजदीक आए।

अतः यह कहना ठीक ही है कि हिन्दी सूफी काव्यधारा ने हिंदुओं व मुसलमानों को साहचर्य व प्रेम से रहने की मानसिकता प्रदान की।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'सरोज-स्मृति' की 'सरोज' के सौन्दर्य-चित्रण को हिन्दी साहित्य की विशिष्ट उपलब्धि क्यों माना जाता है? सोदाहरण बताइए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'सरोज-स्मृति' महाप्राण निराला की उन रचनाओं में से है जो हिन्दी साहित्य के लिए मील का पत्थर है।

पुत्री के वियोग पर पिता का दुख, आर्थिक अक्षमता की वजह से पुत्री का इलाज न करा पाने की निराला के मन की कसक आदि भौतिक जगत की व्यक्तिगत समस्याओं को निराला नें 'सरोज-स्मृति' में बखूबी उकेरा है — कुछ इस तरह से कि भौतिक जगत की कविता आध्यात्मिक रूप धारण कर लेती है।

'सरोज-स्मृति' ऐसी कविता है जिसने ~~[illegible]~~ पितृसत्तात्मक तथा पुत्र-प्रिय समाज में पुत्री को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

कविता के केंद्र में स्थापित किया

कवि को उसका उचित सम्मान न मिल पाना ; "साहित्य के ठेकेदारों" का साहित्य पर कब्जा, प्रकाशक द्वारा कविता को वापस लौटाना, हताश कवि की मनोदशा और अनायास ही उसके मन में उठने वाले विचार जो आर्थिक अभावों की वजह से हैं - आदि को 'सरोज-स्मृति' में निराला ने बेहद सुंदर तरीके से व्यक्त किया है।

ऐसी ही तमाम विशिष्टताओं की वजह से "सरोज-स्मृति" को हिंदी साहित्य की विशिष्ट उपलब्धि माना जाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

3. (क) "आध्यात्मिक रंग के चश्मे आजकल बहुत सस्ते हो गए हैं। उन्हें चढ़ाकर जैसे कुछ लोगों ने गीतगोविन्द को आध्यात्मिक संकेत बताया है, वैसे ही विद्यापति के इन पदों को भी।" इस मत के आलोक में विद्यापति-पदावली के पदों की मूल चेतना पर प्रकाश डालिये। 20

विद्यापति मूलत: मैथिल कवि हैं जिन्होंने "विद्यापति-पदावली" में कृष्ण-भक्ति "का शृंगार वर्णन किया है।

इस शृंगार-वर्णन का मुख्य भाग संयोग शृंगार है।

संयोग शृंगार वर्णन कुछ इस तरह से किया गया है कि उसमें भक्ति-भावना नगण्य और अश्लीलता अधिक नजर आती है। ~~xxxx~~ यद्यपि कुछ लोगों नें इन पदों में आध्यात्मिकता की खोज का प्रयास किया है और राधा तथा कृष्ण को आत्मा-परमात्मा आदि प्रतीकों के माध्यम से समझने का प्रयास किया है, परंतु यह विचार बहुत सही नहीं प्रतीत होता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ऐसे लोगों के लिए ही आचार्य शुक्ल ने कहा कि " आध्यात्मिक रंग के चश्मे आजकल बहुत सस्ते हो गए हैं "

आ. शुक्ल का मत है कि विद्यापति मूलतः शैव हैं न कि वैष्णव ; ऐसा में राधा-कृष्ण का शृंगार वर्णन भक्ति की आड़ में अपनी मूल भावना को प्रगट करना अधिक प्रतीत होता है — "यदि विद्यापति को भक्ति करनी ही थी तो शिव-पार्वती की करते, राधा-कृष्ण की क्यों ? "

विद्यापति नें यह सारी रचनाऐं राज दरबारों के संरक्षण में की हैं जिससे यह भी प्रतीत होता है कि राधा-कृष्ण की प्रतीकात्मकता के साथ उन्होंनें अपने संरक्षक ~~व~~ राजा-रानी का

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का संभोग-श्रृंगार रचा है तथा "राधिका-कन्हाई को तो बहानो है"।

विद्यापति का काल भी वह है जब समाज में अपनी श्रृंगारिक भावनाओं को सीधे-सपाट शब्दों में व्यक्त करना शायद संभव नहीं रहा होगा। संभवतः तत्कालीन ~~समाज~~ सामाजिक परिस्थितियों ने इस बात की अनुमति न दी हो और उन्हें राधा-कृष्ण के प्रतीक का प्रयोग करना पड़ा हो।

अतः यह कहना ही उचित होगा कि यद्यपि विद्यापति-पदावली में ऊपरी स्तर पर भक्ति-भावना दिखती है; पर उसके मूल में सांसारिक संभोग-श्रृंगार ही है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) पद्माकर के शृंगार-वर्णन पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पद्माकर रीतिकालीन कवि हैं जिनकी रचनाएँ दरबारी माहौल की है और सामान्यतः इसमें वो विशेषताएँ है जो दरबारी कविता में होती हैं।

रीतिकालीन कवियों ने मुख्यतः शृंगार-वर्णन ही किया है और पद्माकर की इसी परिपाटी का अनुसरण करते नजर आते हैं।

लगभग 300 साल के भक्ति-काल के बाद कवियों का शृंगार वर्णन बहुत खुले और स्पष्ट रूप में सामने आने लगा था। युद्ध की स्थिति न होने और राजनैतिक स्थिरता ने वीर-काल को भी बहुत अक्सर नहीं किए। ऐसे परिदृश्य में कवियों ने शृंगार रस की कविताएँ ही मुख्यतः रची, और पद्माकर भी ऐसी ही कवियों की कतार में ही

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खड़े नजर आते हैं। पद्माकर के यहाँ शृंगार में भावनाएँ कम महत्व की हैं तथा बाह्य सौंदर्य अधिक महत्वपूर्ण है। नायिका एक "व्यक्ति" न होकर मात्र एक "वस्तु" है पद्माकर का शृंगार उनके इस पद से साफ स्पष्ट होता है—

"गुलगुली गिल में गलीचा हैं गुनीजन हैं,
चाँदनी है, चिक है, चिरागन की माला है,
कहैं पद्माकर त्यों गजक गिजा हैं सजी,
सेज है, सुरा है, सुराही हैं और प्याला है।"

पद्माकर के शृंगार-वर्णन में वियोग-शृंगार लगभग अनुपस्थित ही है तथा संयोग-शृंगार भी "नख-शिख वर्णन" तथा "सेज-सुरा-सुराही" तक ही मुख्यतः सीमित है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) प्रगतिवादी कविता की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिये। 15

प्रगतिवाद मार्क्सवाद का साहित्यिक संस्करण है और प्रगतिवादी कविता उन प्रवृत्तियों को धारण करती है जो मार्क्सवादी विचारधारा के मूल में है।

प्रगतिवादी कविता शिल्प के स्थान पर कथ्य को महत्व देती है। इनका मानना है कि कविता का उद्देश्य क्रांति चेतना का विस्तार करना है, अतः शिल्प महत्वहीन और कथ्य ही महत्वपूर्ण है।

चूँकि कविता सर्वहारा और वंचित वर्गों पर केंद्रित होती है इसलिए प्रतीकात्मकता से बचा जाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कविता को मनोरंजन के साधन के तौर पर नहीं देखते हैं तथा काव्य रचना को जन्मजात गुण के रूप में नहीं स्वीकार करते हैं।

काव्य रचना एक माध्यम है जिसके माध्यम से बुद्धिजीवी वर्ग समाज के प्रति अपने दायित्व का निर्वहन करते हैं।

चूँकि मार्क्सवाद मानता है कि सारी चीजें आर्थिक स्थितियों का "बाई प्रोडक्ट" हैं इसलिए प्रगतिवादी कविता में भी मुख्यतः यही बात दृष्टिगोचर होती है।

प्रगतिवादी कविता सौंदर्य वर्णन में उन चीजों से बचती है जिन्हें आभिजात्य वर्ग का समझा जाता है। उदाहरण स्वरूप गुलाब के सौंदर्य वर्णन से बचना और गेंहू, गन्ना आदि चीजों की सुंदरता का वर्णन करना।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यद्यपि प्रगतिवादी कविता में मुख्यतः उपरोक्त वर्णित प्रवृत्तियाँ मिलती हैं तथापि इसमें अपवाद भी हैं।

उदाहरण स्वरूप – मुक्तिबोध जैसे प्रगतिवादी कवि उचित कथ्य को कहने के लिए उचित शिल्प का प्रयोग करनी की बात कहते हैं;

नागार्जुन जैसे कवि प्रगतिवादी भौतिकता के बजाए समाजवादी यथार्थ को महत्व देते हैं तथा जनहित और विचारधारा के टकराव में जनहित को महत्व देते हैं।

"क्या है दक्षिण क्या है वाम
जनता को रोटी से काम"

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) क्या भक्तिकाव्य को लोकजागरण का काव्य कहना उचित है? सुचिंतित विचार प्रस्तुत कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) 'कविवचन सुधा' पत्रिका

'कविवचन सुधा" नामक पत्रिका भारतेंदु हरिश्चंद्र के संपादन में प्रकाशित होती थी। इसके माध्यम से भारतेंदु ने साहित्य समीक्षा के साथ-2 ब्रिटिश राज के विरोध में जनमत तैयार करने के लिए भी लेख लिखे।

बाद में इसी वजह से ब्रिटिश राज ने इसी पत्रिका को बंद भी करवा दिया था।

साहित्य के इतिहास के साथ देश के इतिहास में यह पत्रिका एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। एक ओर जहाँ इस पत्रिका के माध्यम से हिंदी की कुछ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

मौलिक समीक्षाएँ सामने आई तो इस पर ब्रिटिश कार्यवाही और इसके संपादन का बंद होना स्वतंत्रता सेनानियों और बुद्धिजीवियों के लिए एक ~~संकेत~~ पाठ था कि उन्हें आगे से ब्रिटिश राज के प्रति जनमत तैयार करने के लिए किन तरीकों का प्रयोग करना है और किनका नहीं करना है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this sp

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) नाटककार रामकुमार वर्मा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) भारतेन्दुयुगीन हिंदी नाटक पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

हिन्दी नाटक के विकास में भारतेंदु युगीन नाटक एक मील का पत्थर हैं। भारतेंदु हरिश्चंद्र के नेतृत्व में भारतेंदु मण्डल के अन्य रचनाकारों को पारसी "लटकों-झटकों" से मुक्त कर समाज से जोड़ने का कार्य किया। इसके पूर्व के नाटकों में सामाजिकता का तत्व नगण्य तथा "लटके-झटके" व आश्चर्य उत्पन्न करने वाले तत्व अधिक होते थे। थोड़ी-थोड़ी देर बाद गीत; नाटक के बीच में अनायास ही कुछ घटित हो जाना आदि तत्वों की भरमार रहती थी। भारतेंदु युगीन नाटक ने इस परंपरा को तोड़।

यद्यपि गीतों की गाना अभी से कुछ सीमा तक भी पर यह पहले से बहुत कम थी तथा आश्चर्य उत्पन्न करने वाली नहीं भी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारतेंदु का "अंधेर-नगरी" तथा "भारत-दुर्दशा" इस क्रम प्रतिनिधि नाटक हैं।

यह नाटक रंगमंचीयता की दृष्टि से भी बहुत आसान हैं। "अंधेर नगरी" और "भारत-दुर्दशा" जैसे नाटकों का मंचन करने के लिए तो नाट्य-निर्देशक को कुछ अधिक प्रयास ही न करना पड़े। ~~अब~~ इस युग के नाटक पहले की तुलना में अधिक श्रम सुलभ और संसाधन सुलभ थे।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) हिन्दी निबंध के विकास में आचार्य रामचंद्र शुक्ल के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिंदी निबंध के विकास में आचार्य शुक्ल के योगदान का मूल्यांकन इसी बात से किया जा सकता है कि हिंदी निबंध में काल विभाजन की इन्हीं के नाम पर होता है।

(1) शुक्ल पूर्व निबंध
(2) शुक्ल युगीन निबंध
(3) शुक्लोत्तर निबंध

आचार्य रामचंद्र शुक्ल से पूर्व निबंध की लेखन की एक स्वस्थ परंपरा हिंदी साहित्य में चल रही थी। बालकृष्ण भट्ट जैसे निबंधकार इस कमी को बखूबी आगे बढ़ा रहे थे।

परंतु आ. शुक्ल का निबंध लेखन में आगमन हिंदी निबंध लेखन के लिए एक बड़ी उपलब्धि साबित हुई। उन्होंने निबंधों को आत्मिक विचार परक बनाया। निबंधों में किए जाने वाले विश्लेषण को

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अति सूक्ष्म स्तर पर ले गए। "श्रद्धा-भक्ति" नामक उनका निबंध इसका बात का प्रतीक है कि किस प्रकार उन्होंने मात्र दो शब्द या दो मानवीय भावनाओं को लेकर अति सूक्ष्म विश्लेषण किया।

शब्दों की सधा हुआ प्रयोग और वाक्यों में ठूँस-ठूँस कर शब्दों का इस तरह से प्रयोग कि हर शब्द मनुष्य के मस्तिष्क में एक नए विचार पैदा करे — ऐसी परंपरा का सूत्रपात आ. शुक्ल ने किया। उन्होंने इस परंपरा की शुरुआत की कि हर वाक्य बहुत गंभीर होनी चाहिए, और हल्के वाक्य सिर्फ कभी-कभार ही प्रयोग किए जाएँ और वो भी सिर्फ इस प्रयोजन से कि पाठक निबंध पढ़ते समय थकावट या बोरियत न महसूस करे।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विचारपरक निबंधों को उन्होंने एक अद्भुत ऊँचाई और सूक्ष्मता प्रदान की।

आ० शुक्ल का यह कथन था कि "गद्य लेखन में निबंध लेखन और निबंध लेखन में वैचारिक निबंध लेखन" ही किसी साहित्यकार की असली योग्यता को दर्शाते हैं।

"चिन्तामणि" नामक पुस्तक में आ० शुक्ल के निबंधों का संकलन किया गया है। इन निबंधों को पढ़कर यह अनुमान लगाना बिल्कुल भी कठिन नहीं है कि आ० शुक्ल निबंध लेखन की परंपरा में ही एक कड़ी न होकर एक "युग-पुरुष" हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अज्ञेय के यात्रा-साहित्य का परिचय देते हुए उसके वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

~~अज्ञेय का~~ यात्रा-साहित्य लेखन में अज्ञेय महापण्डित राहुल सांकृत्यायन और बाबा नागार्जुन जैसे लोगों की कतार में खड़े पाए जाते हैं जिन्होंने यात्रा ~~साहित्य~~ पर विस्तृत साहित्य लिखा है।

अज्ञेय के पिता भारतीय पुरातत्व विभाग में कार्यरत थे और कार्य के सिलसिले में एक जगह से दूसरी जगह भ्रमण करते रहते थे, और अज्ञेय भी बचपन से ही उनके साथ भ्रमण करते ही रहते थे। इस चीज नें अज्ञेय को आम बालकों से ~~काफ~~ कुछ दूर किया तो अज्ञेय प्रकृति ~~और संस्कृति~~ के अधिक नजदीक पहुँच गए।

अज्ञेय के यात्रा-साहित्य में इस प्रकृति-प्रेम की छाप ~~हमें~~ लगातार देखने को मिलती है। ऐतिहासिक-सांस्कृतिक तत्व भी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

निरंतर उपलब्ध है। अज्ञेय ने अपने जीवन शुरुआती समय में भगत सिंह और चंद्रशेखर आजाद जैसे क्रांतिकारियों के साथ काम किया। इस क्रम उनकी गतिविधियाँ भी कुछ जगहों पर अपनी झलक दिखलाती है।

अज्ञेय का जन्म भी कुशीनगर में उसी स्थान पर हुआ जहाँ महात्मा बुद्ध का महापरिनिर्वाण हुआ था। बौद्ध धर्म और बौद्ध दर्शन का अज्ञेय पर विशेष प्रभाव था विशेषतः ज़ेन बौद्धमत की; और इसी के बारे अधिक जानने-समझने के लिए भी अज्ञेय ने कोरिया, जापान आदि देशों की यात्रा की। अध्यापन कार्य हेतु अज्ञेय अमेरिका में भी रहे।

इन सारी यात्राओं की झलकी अज्ञेय के यात्रा साहित्य में मिलती

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

है।

अज्ञेय अति भावुक किस्म के रचनाकार न होकर एक गंभीर विचारक और चिंतक हैं। उनके चिंतन में सूक्ष्मता है, और यही सूक्ष्मता उनके यात्रा-साहित्य वर्णन में भी मिलती है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) समकालीन हिंदी उपन्यास में 'स्त्री-विमर्श' की उपस्थिति की पहचान कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation